

## सैसल या गणना विधि की विशेषताएँ

गणना विधि (सैसल या गणना विधि) द्वारा आंकड़ा एकत्र करने में अधिक समय एवं श्रम की आवश्यकता होती है।

गणना विधि द्वारा आंकड़ा संग्रह करने में विस्तृत प्रबन्धन की आवश्यकता होती है।

गणना विधि द्वारा एकत्र आंकड़ा का उपयोग बृहत् संस्थानों द्वारा किया जाता है।

## सैम्पल या न्याय विधि

वैकिक विवेकपूर्ण विवेकपूर्ण प्रयुक्त वांछित आंकड़ों के समूह में विधि जिसमें कुल जनसंख्या या समष्टि की कुछ चुनी हुई प्रतिनिधि इकाइयों या सैम्पल का ही निरीक्षण किया जाता है, सैम्पल या प्रतिदर्श विधि कही जाती है।

## सैम्पल या प्रतिदर्श विधि की विशेषताएँ

प्रतिदर्श विधि द्वारा आंकड़ा इकट्ठा करने में कम समय एवं कम श्रम की आवश्यकता होती है।

प्रतिदर्श विधि द्वारा आंकड़ा इकट्ठा करने में कम प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। इस विधि द्वारा एकत्रित आंकड़ों का उपयोग एकाकी शोध के लिए किया जाता है।

## विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सामग्री (डेटा) के उपयोग में सावधानियाँ

- 1- आंकड़ों की प्रमाणीयता — अनुसंधानकर्ता को यथानुसार चाहिए कि अनुसंधान में केवल प्रामाणिक आंकड़ों का उपयोग करे अन्यथा निष्कर्ष दोषपूर्ण होगा। द्वितीय स्रोत से प्राप्त डेटा की प्रामाणिकता

को विशेषतः से जांच कर ले क्योंकि पता नही किन परिस्थितियों में तथा किन कारणों से द्वितीय डाटा का संग्रह किया गया है।

2- सूचनाएं प्रदान करने वाले व्यक्तियों का ज्ञान

अनुसंधानकर्ता के लिए यह भी आवश्यक है कि वह उन व्यक्तियों की क्षमता के विषय में भी अच्छी जानकारी रखे जिन्हें द्वारा वह सूचनाएं प्राप्त कर रहा है।

3- सामग्री की उपयोगिता का मूल्यांकन -

अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि प्रयोग करने से पूर्व वह उस सामग्री की उपयोगिता का मूल्यांकन कर ले।

4- लिखित अभिलेखों का उपयोग -

यह भी बात कर लेता आवश्यक होगा कि सूचना दाता ने किस उपयोग से और किन परिस्थितियों में इन सूचनाओं का संकलन किया है। लिखित सामग्री में लेखक की लची पद्धतता तथा तत्कालीन परिस्थितियों का विशेष प्रभाव पड़ता है। इनके सन्दर्भ में ही सूचनाओं पर विचार करने से सफलता प्राप्त होगी।

## डाटा का वर्गीकरण Classification of Data

आकड़ों के संचयन के ठीक वर्गीकरण किया जाता है। प्राथमिक सामग्री (डाटा) अपने आरम्भिक रूप में अस्पष्ट, विरल तथा उलझी हुयी होती है।

इसे प्रदर्शन के योग्य बनाने तथा विश्लेषण करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए उस सामग्री को एक व्यवस्थित रूप देना आवश्यक होता है। वर्गीकरण के बिना न तो उसका विश्लेषण किया जा सकता है और न तो उसके ~~निष्कर्ष~~ <sup>आधार</sup> पर कोई वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त हो सकता है। अतः एकत्रित सामग्री का उपयोगिता की दृष्टि से संक्षिप्त करना और उसे एक व्यवस्थित रूप देना आवश्यक है। वर्गीकरण सामग्री को व्यवस्थित ~~रूप~~ एवं संक्षिप्त करने की वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत समान एवं असमान लक्षणों के अनुसार सामग्री इस प्रकार व्यवस्थित करते हैं कि समान लक्षणों वाली सामग्री एक वर्ग में तथा असमान लक्षणों वाली सामग्री दूसरे वर्ग में आ सके। ऐसा करने से डेटा में स्पष्टता आ जाती है।

### वर्गीकरण के गुण

- 1- स्पष्टता - वर्गीकरण की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्पष्टता है। विभिन्न वर्गों में विभाजित सामग्री इस प्रकार सुगम एवं स्पष्ट होनी चाहिए कि उसमें तन्देह के लिए कोई स्थान न हो।
- 2- स्थिरता - वर्गीकरण में स्थिरता का होना आवश्यक होता है। स्थिरता के बिना प्रत्येक

पुनरावृत्ति में निम्नता उत्पन्न हो जाती है।

इस कारण तुलनात्मक अनुचयन करना असम्भव हो जाता है।

3- **परिवर्तनशीलता** → वर्गीकरण के लिए यह आवृत्तिक है कि इसमें समय एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन एवं समन्वय की क्षमता हो।

### **वर्गीकरण के आधार**

1- **गुणात्मक आधार** → इसका तात्पर्य है कि सामग्री को उसके लक्षणों एवं गुणों के आधार पर विभाजित किया जाए। जैसे - लंबाई, प्रकृति आदि

2- **संख्यात्मक या परिमाणात्मक आधार** → जब सामग्री को गुणात्मक आधार पर वर्गीकृत नहीं किया जा सकता वहाँ परिमाणात्मक या संख्यात्मक आधार अपनाया जाता है। जैसे - माप, लम्बाई, संख्या आदि

3- **सामाजिक आधार** → इसके अन्तर्गत सामग्री को वर्गीकरण विशेष समय की प्रवृत्ति अथवा घटना के अनुसार किया जाता है।

4- **भौगोलिक आधार** → इसके अन्तर्गत विभिन्न विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार सामग्री का वर्गीकरण हो सकता है।